पवन प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17
मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16
वर्ष 03 अंक 04 लखनऊ। सोमवार 17 से 23 अक्टूबर-2016
e-mail-pawanprawah@gmail.com

रुद्राक्ष व तुलसी की माला में 108 मनिकाओं का वैज्ञानिक महत्व

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के निदेशक
वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी हैं

चन्द्रमा व पृथ्वी का व्यास

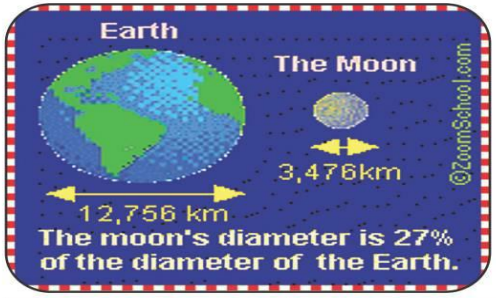

सूर्य व पृथ्वी का व्यास

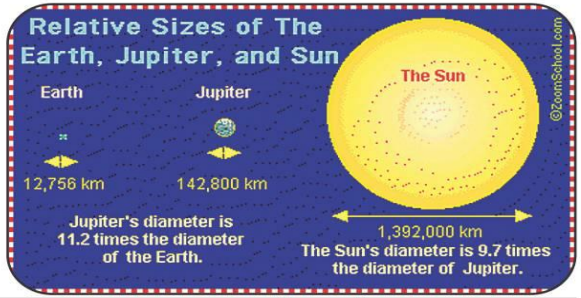

हम सभी जानते हैं कि भगवान शिव असीम ऊर्जा अथवा शक्ति के में आराध्य हैं और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को चला रहे हैं तथा इनकी पूजा का महत्व विभिन्न हिन्दू धर्म ग्रंथों में प्रकट किया गया है। इसी प्रकार ब्रह्मा को संसारिक जीवों की उत्पत्ति का और विष्णु को संसारिक क्रिया कलापों को चलाने का ध्योतक माना गया है।

यहां पर आज प्रोफेसर (डॉ.) भरत राज सिंह, निदेशक स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज लखनऊ जो वैदिक विज्ञान केन्द्र के भी मुख्य संयोजक है से रुद्राक्ष की माला में 108 मनिकाओं तथा तुलसी की माला में भी 108 मनिकाओं के रखे जाने व उसके जाप के विषय में चर्चा की गयी।

रुद्राक्ष की माला में 108 मनिकाओं का महत्व: प्रोफेसर भरत राज सिंह ने बताया कि

रुद्राक्ष अपनी विभिन्न गुणों के कारण व्यक्ति को दिया गया, 'प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है'। ऐसी मान्यता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के नेत्रों से निकले जल बिन्दुओं से हुई है। जिसके फलस्वरूप रुद्राक्ष का महत्व जग प्रकाशित है। रुद्राक्ष को धारण करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं तथा इसको धारण करके की गई पूजा हरिद्वार, काशी, गंगा जैसे तीर्थस्थलों के समान फल प्रदान करती है।

रुद्राक्ष की माला द्वारा मंत्र उच्चारण करने से फल प्राप्ति की संभावना कई गुना बढ़ जाती है

तथा इसे धारण करने वाले व्यक्ति को सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। रुद्राक्ष की माला अष्टोत्तर शत अर्थात 108 रुद्राक्षों की या 54 रुद्राक्षों की होनी चाहिए अन्यथा सत्ताइस दाने की तो अवश्य हो। इस संख्या में इन रुद्राक्ष मनकों को पहनना विशेष फलदायी माना गया है। शिव भगवान का पूजन एवं मंत्र जाप रुद्राक्ष की माला से करना बहुत प्रभावी माना गया है तथा अलग-अलग रुद्राक्ष के दानों की माला से जाप या पूजन करने से विभिन्न इच्छाओं की पूर्ति होती है।

तुसली की माला में 108 मनिकाओं का महत्व: भारत में पुरातन काल से ही तुलसी की औषधीय गुणों को काफी महत्ता प्रदान की गयी है तथा शारीरिक कष्टों के निवारण में तुलसी की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया गया है। इसे चन्द्रमा को प्रतीक माना गया है। आइए जानें तुलसी के पत्तियों के कुछ अवसधीय गुणों के बारें में, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हैं तुलसी में शोध के उपरांत विभिन्न स्वास्थ्य लाभ के गुणों की पुष्टि होती हैं, जैसे- तुलसी की पत्तियां कफ साफ कर खांसी में लाभप्रद, त्वचा के रोगों को दूर करने काढ़ा पीने से सिरदर्द में राहत, इलाइची अदरक व तुलसी की पत्तियों के सेवन से दस्त उल्टी दूर होना, तुलसी की 8-10 पत्तियां रोजाना खाने से तनाव दूर होता है, तुलसी के अर्क से आंख की समस्या में लाभ, तुलसी के अर्क में कपूर मिलाकर कान में डालने से सूनने की समस्या दूर होना, तुलसी की पत्तियां खाने व काढ़ा पीने से दमा व सांस की तकलीफ दूर होना और रोजाना तुलसी की पत्तियां चबाने मुह का संक्रमण दूर होने का लाभ प्राप्त होता है।

यहां यह उल्लेख करना अति महत्वपूर्ण होगा की यदि तुलसी की पत्तियों में इतने गुण है, तो इसकी 108 मनिकाओं की माला को धारण कर पाठ करने से शारीरिक सभी कष्टों का निवारण अवश्य होगा तथा मनुष्य को स्वस्थ्य व निरोगी शरीर से अच्छे करने में लगाव बढ़ता है।

108 मनिकाओं का वैज्ञानिक कारण व महत्व: अब आइये 108 मनिकाओं के बारे में कुछ विशेष जानकारी हासिल करें। यह लेख 'वैदिक विज्ञान केन्द्र, स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साइंसेज, लखनऊ का एक महत्वपूर्ण शोध है-

जब हम रुद्राक्ष की 108 मनिकाओं का जाप मंत्रों के साथ करते हैं तो हमारा उद्देश्य परम शक्ति भगवान शिव से जुड़ने की होती है। तो क्या हम 108 बार मंत्रों की उच्चारण से असीम शक्तिवान हमारे इष्ट देव सूर्य, जो शिव है, उन पक पहुंच जाते हैं?

यही बात तुलसी की माला पर भी लागू होती है, जो 108 मनिकाओं की होती है, उसके 108 बार जाप से क्या हम चन्द्रमा तक पहुंच जाते हैं? जी हां, चौकिये नहीं यह बात बिल्कुल सत्य है।

अब आइये इस अध्ययन को कुछ विज्ञान व गणित के तराजू पर तौले और यह देखें कि हम कैसे सूर्य व चन्द्रमा तक अपने को पहुंचाते हैं और उनकी शक्तियों का विशेष लाभ उठाते हैं। इन गणनाओं से 108 मनिकाओं के महत्व तथा उक्त तथ्यों की पुष्टि दर्शाती है-

1- रुद्राक्ष की 108 मनिकाओं की माला का ही जाप क्यों?

अ). सूर्य का व्यास क्या है? यह है- 13,92,684 कि.मी.

ब). यदि इसे 108 से गुणा करते हैं तो यह दूरी आती है। 15,04,09,872 कि. मी., (अर्थात 15 करोड़ 4 लाख 9 हजार 8 सौ बहत्तर कि.मी.)। उपरोक्त दूरी पृथ्वी से सूर्य की है, जो आज तक के रिकॉर्ड के हिसाब से 14,96,00,000 कि.मी. (14 करोड़ 96 लाख कि.मी.), के लगभग आकी गयी है।

रुद्राक्ष की 108.मनिकावाली माला

स). इस प्रकार रुद्राक्ष की एक मनिका को सूर्य का व्यास मानते हुए, 108 बार मंत्रों के जाप से सूर्य शक्ति का प्रवाह शरीर में प्राप्त होने लगता है।

2- तुलसी की 108 मनिकाओ की माला का ही जाप क्यों?

अ). चन्द्रमा का व्यास क्या है? यह है-

3,474 कि.मी.

ब). यदि इसे 108 से गुणा करते हें तो यह दूरी आती है 3,75,192 कि.मी. (अर्थात 3 लाख 75 हजार 1 सौ बानवे)। उपरोक्त दूरी पृथ्वी से चन्द्रमा की है जो आज तक के रिकार्ड के हिसाब से 3, 70, 300 कि.मी. (3 लाख 70 हजार 3 सौ कि.मी.) के लगभग आकी गयी है।

स). इस प्रकार तुलसी की मनिका को चन्द्रमा (का व्यास) मानते हुए, 108 बार मंत्रों के जाप से चन्द्र शक्ति प्राप्त हो जाती है और सभी

दुखों का विनाश हो जाता है।

तुलसी की 108 मनिकावाली माला

उपरोक्त तथ्यों से आप अचम्भित अवश्य हो रहे होंगे, परन्तु यह भारत की वैदिक विज्ञान की एक अनोखी पहल है, जिससे शारीरिक शक्ति को बढ़ाने में मंत्रों का अद्भुत उपयोग आदिकाल से होता रहा है। इस प्रकार जहां एक तरफ रुद्राक्ष की 108 मनिकाओं की माला के जप से एक अनोखी ऊर्जा शक्ति पैदा कर अच्छे कार्य के साथ-साथ आयु में वृद्धि होती है, वही दूसरे तरफ तुलसी 108 मनिकाओ की माला के जप से चन्द्र शक्तिओं का लाभ उठाते हुए निरोग रहकर, लोगों को अच्छे कर्म से जोड़ कर संसारिक श्रृष्टि को चलाने का दायित्व का निर्वाहन होता है।

अब हम वैदिक समय के 108 अंकों की महत्ता के कुछ अन्य तथ्यों को भी आप से सम्मुख रखना चाहूंगा:

अ). ब्रह्माण्ड में ग्रहों की संख्या 9 है तथा प्रत्येक गृह पर 12 राशियों का प्रभाव पड़ता है, इस प्रकार कुल संख्या 108 आती है।

ब). ब्रह्माण्ड में नक्षत्रों की संख्या 27 है तथा प्रत्येक नक्षत्रों के 4 चरण होते हैं, इस की भी कुल संख्या 108 आती है।

स). आकाश गंगा में कुल मुख्य तारों कि संख्या 108 होती है।

द). समुन्द्र मंथन के समय 54 देवता तथा 54 दानवों ने मंथन में भाग लिया था, इस प्रकार कुल संख्या 108 हुई।

इससे यह साबित होता है कि वैदिक काल में 108 संख्या का विशेष महत्व था। आइये भारत के गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित करने हेतु 'वैदिक विज्ञान केन्द्र, लखनऊ' से जुड़कर वैदिक ज्ञान को लोगों में फैलाए तथा इनकी सत्यता की परख को दुनिया के लोगों के सामने रखकर, भारत की पौराणिक वैदिक धरोहर को वसुधैव कुटुम्बकम् से जोड़कार जीवन की सार्थकता को समर्पण भाव से जनमानस के लिए उपयोगी बनाये।

● समाप्त